अवधी का विकास एवं विशेषताएँ

'अवधी' अवध प्रदेश की बोली है। यह पूर्वी हिन्दी की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बोली है। इसके नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि यह केवल अवध की बोली है, किन्तु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। एक ओर यह हरदोई और फैजाबाद जनपद के कुछ भागों को छोड़कर यह सम्पूर्ण अवध में प्रचलित है। दूसरी ओर यह बोली अवध के बाहर फतेहपुर, इलाहाबाद तहसील, ~~छोड़कर~~ जौनपुर तथा मिर्जापुर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। यह बोली उत्तरप्रदेश के लखनऊ, रायबरेली, सीतापुर, बाराबंकी, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, लखीमपुरखीरी जिलों में बोली जाती है। इसके अतिरिक्त गंगापार दक्षिण में फतेहपुर प्रयाग, मिर्जापुर क्षेत्र में भी यह बोली बोली जाती है। इसके ~~अतिरिक्त गंगापार~~ इसके पूर्वी या पुरबिया, कौसली, बैसवाड़ी जैसे अनेक नाम मिलते हैं, परन्तु इसका सामान्य नाम अवधी ही रहा है। तुलसीदास कृत रामचरितमानस के कारण अवध शब्द इतना अधिक प्रचलित हो गया है कि इस प्रदेश की बोली के लिए अवधी नाम सर्वथा उपयुक्त है।

अवधी की उत्पत्ति के विषय में तीन मत विशेष रूप से प्रचलित हैं—

1. ग्रियर्सन ने अवधी का जन्म अर्धमागधी से माना है।
2. बाबूराम सक्सेना ने पालि से अवधी का जन्म माना है।
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने नागरी अपभ्रंश से इसका जन्म माना है।

अवधी के रूप तथा क्षेत्र — अवधी को क्षेत्रीय दृष्टि से तीन रूपों में बाँटा जाता है—

I. पश्चिमी अवधी – लखीमपुर, सीतापुर, लखनऊ, उन्नाव फतेहपुर आदि।

II. केन्द्रीय अवधी — बहराइच, बाराबंकी, रायबरेली आदि।

III. पूर्वी अवधी — गोण्डा, फैजाबाद, सुल्तानपुर, इलाहाबाद जौनपुर, मिर्जापुर आदि।

साहित्यिक दृष्टि से इसके दो रूप बताए गए हैं - एक ठेठ अवधी या ग्रामीण अवधी, जिसका स्वरूप सूफी प्रेमाख्यानक काव्यों में मिलता है तथा दूसरा साहित्यिक अवधी जिसका स्वरूप 'रामचरितमानस' में मिलता है।

Scanned by CamScanner

अवधी भाषा का विकास — अवधी भाषा के विकास की लम्बी अवधि मिलती है। लगभग सभी कालों में अवधी का प्रयोग होता रहा है।

आदिकाल — आदिकालीन रचनाओं - प्राकृत पैंगलम, राउरवेल, उक्ति-व्यक्ति प्रकरण में अवधी के पूर्वरूप का आभास मिल जाता है पर यह पुरानी हिन्दी की रचनाएं हैं। मुल्ला दाऊद की 'चन्दायन' को माताप्रसाद गुप्त ने शुद्ध अवधी का ग्रन्थ माना है। इसमें मसनवी शैली का प्रयोग हुआ है। अवधी का सहज सरल रूप इसमें देखा जा सकता है।

भक्तिकाल — भक्तिकाल की प्रेमकाव्यधारा की भाषा अवधी है। सन्तकाव्यधारा में भी कुछ रचनाओं की भाषा अवधी है। सन्तकाव्यधारा में सन्त मलूकदास द्वारा रचित ग्रंथों की काव्यभाषा शुद्ध अवधी है। मलूकदास के शिष्य मथुरादास की भाषा भी अवधी है, लेकिन उसमें ग्रामीण शब्दों की भरमार है। धरनीदास की 'सत्यप्रकाश' एवं 'प्रेमप्रकाश' अवधी के शुद्ध रूप का उदाहरण हैं। चरणदास की रचनाएं - ज्ञान स्वरोदय, भक्ति पदार्थ, भक्ति सागर, पंचोपनिषद सार एवं अमरलोक अखंड धाम की भाषा सधुक्कड़ी मिश्रित अवधी भाषा है। वास्तव में सन्त काव्यधारा की अवधी भाषा सहज, सरल तथा स्वाभाविक है।

भक्तिकाल की प्रेमकाव्यधारा के कवियों ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। इस काल के जायसी, कुतुबन, मंझन आदि कवियों की काव्यभाषा अवधी है। कुतुबन कृत 'मृगावती' की भाषा सहज, स्वाभाविक तथा ग्रामीण प्रभाव से युक्त है। उन्होंने संस्कृत की तत्सम, तद्भव शब्दावली का मेल ग्रामीण अवधी से मिलाया है। कतिपय पंक्तियां द्रष्टव्य हैं —

माथा
लिखइ लिलार दुइजि भाखि रेखा।
उएउ मयंक मीनु जनु देखा।

ठेठ अवधी के श्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी के ग्रन्थों - पद्मावत, अखरावट तथा आखिरी कलाम की भाषा तद्युगीन बोलचाल की अवधी है। इसमें पूर्वी अवधी के शब्दों का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। जायसी

Scanned by CamScanner

ग्रामीण या ठेठ अवधी को काव्य उत्कर्ष की चरम सीमा तक पहुँचाया है। इस काल के बहुत से कवियों ने इस भाषा का प्रयोग किया है। प्रेमकाव्य की रचना में मंझन, उसमान, आलम, नूर मुहम्मद, शेखनिसार, कासिमशाह, ख्वाजा अहमद, कवि नसीर, भीमकवि आदि सभी कवियों ने अवधी का प्रयोग किया है।

रामकाव्यधारा में महाकवि तुलसीदास का नाम सर्वोपरि है। इन्होंने रामचरितमानस की रचना अवधी भाषा में की है। जायसी ने यदि ठेठ अवधी भाषा को साहित्य भवन में प्रवेश कराया तो तुलसी ने उसे साहित्यिक भाषा-महिमा से मण्डित किया। तुलसी के कारण ही हिन्दी और अवधी पर्याय रूप में जानी जाने लगी। तुलसी ने अवधी की पगडंडी को जो राजमार्ग प्रदान किया, उस पर बाद के रामकाव्यधारा के अग्रदास, रहीम, लाल, रामप्रियाशरण, मधुसूदन दास आदि चलाते रहे हैं। तुलसीदास ने लोकभाषा अवधी में संस्कृत शब्दावली का मिश्रण करके भाषिक समन्वय का प्रयास किया है तो रहीम ने अवधी मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग किया है। गुण, रीति, अलंकार, बिम्ब, उपमान, मिथ, काव्य रूढ़ियों का प्रयोग छन्दों का संस्कार, लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग द्वारा तुलसी ने अवधी को समृद्ध किया है।

आधुनिक काल – पण्डित द्वारकाप्रसाद मिश्र ने रामचरितमानस के अनुकरण पर कृष्णायन ग्रन्थ की रचना की है। इसमें अवधी का सुन्दर प्रयोग है। इस काल के अन्य कवि श्री शारदाप्रसाद, पंडित गिरिजादत्त शुक्ल, वंशीधर शुक्ल आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्होंने अवधी भाषा में सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इस प्रकार अवधी में साहित्य तथा लोकसाहित्य की परम समृद्ध परम्परा है।

अवधी भाषा की विशेषताएँ :–

1 अवधी की दस ध्वनियाँ हैं – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। ए तथा ओ का प्रयोग ह्रस्व तथा दीर्घ दोनों में होता है।

2 इसमें इ (गोलि) उ (सांपु) और ए (कहेस) से जापित रूप बनते हैं।

3 सभी स्वरों के अनुनासिक रूप भी विद्यमान हैं।

4 ऊष्म (स, श, ष) में केवल 'स' रह गया है। जैसे- सर्प – सांप, शाखा – साखा, षोडश – सोरह।

यह एक कोमल, विनम्र तथा संगीतात्मक बोली है। इसलिए इसमें कठोर ध्वनियों का प्रयोग कम होता है। या उनका कोमल ध्वनियों में रूपान्तर हो जाता है। ट, ठ, ड, ढ का प्रयोग बहुत कम है। ण का न उच्चारण हो जाता है। जैसे- गुण-गुन लक्ष्मण - लछमन।

6 'ल' ध्वनि के स्थान पर 'र' का प्रयोग होता है। जैसे मछली का मछरी, जल - जर, गाली - गारी

7 ड़ व ढ़ के स्थान पर र एवं रह का प्रयोग होता है। जैसे- तोड़े - तोरे, मोड़े - मोरे, पढ़े - परहे।

8 स्वर अनुक्रम बहुत है। दो - दुई, कौन - कउन, और - अउर ऐसा → अइसा।

9 य और व का रूपान्तरण इ, उ में होता है। यहाँ - इहाँ, वहाँ -- उहाँ।

10 अवधी में संज्ञाओं के तीन रूप मिलते हैं। ह्रस्व, दीर्घ तथा दीर्घतर जैसे- लरिका, लरिकवा, लरिकवना।

11 सर्वनाम - मेरा - मोर, तेरा - तोर का प्रयोग होता है।

12 क्रिया रूप —

भूतकाल क्रियापद - मारा (मार्‌या)
भविष्यत् कालिक → जाएगा (जाइब या जाइबे)
भूतकालिक सहायकक्रिया → था (रहौ, रहै)
क्रियार्थक संज्ञाएँ → चलना (चलब) देखब, बोलब।

13 परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं मिलता।

14 अव्यय - अब, जब का रूपान्तरित रूप अबई, जबई है।

एक स्वर के साथ दूसरा स्वर आना अनुक्रम होता है।

ब्रजभाषा का विकास एवं विशेषताएं —

ब्रजभाषा का सम्बन्ध आज केवल ब्रजक्षेत्र से जोड़कर देखा जाता है। ब्रज का पुराना अर्थ गौओं का समूह या चारागाह आदि हैं। पशुपालन के प्राधान्य के कारण यह क्षेत्र कदाचित् ब्रज कहलाया और इसी आधार पर इसकी भाषा ब्रजभाषा कही जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के मध्यवर्ती रूप में हुआ है। पालि के पश्चात शौरसेनी का प्रभुत्व बढ़ा। शौरसेनी से विकसित प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएं बनी और अपभ्रंश से ही ब्रजभाषा का विकास हुआ।

आज यह भाषा उत्तर प्रदेश के अलीगढ़, हरदोई, इटावा, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, फर्रुखाबाद, कानपुर, आगरा, मथुरा, बुलन्दशहर, एटा, मैनपुरी, बदायूं, रायबरेली, हरियाणा के गुड़गांव, फरीदाबाद में बोली जाती है। राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर, करौली और जयपुर के पूर्वी भाग, मध्यप्रदेश के ग्वालियर के पश्चिमी भाग में इसी भाषा का प्रयोग होता है। गंगा के पार नैनीताल की तराई में भी इसी का विस्तार है। गंगा यमुना का दोआब आर्यों की पवित्र यज्ञभूमि होने के कारण 'अन्तर्वेद' कहलाता है। इसी कारण ब्रजभाषा को 'अन्तर्वेदी' भी कहा जाता है।

सन 1921 की जनगणना के अनुसार इस भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या 79 लाख बताई गई है। वर्तमान समय में इसके बोलने वालों की संख्या एक करोड़ पच्चीस लाख बताई गई है।

मध्य युग में ब्रजभाषा का प्रचार-प्रसार हो गया था। मुगल दरबारों में भी ब्रजभाषा का प्रयोग होता था। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने ब्रजभाषा का उदय पुरानी हिन्दी या परवर्ती अपभ्रंश से माना है। वे ब्रजभाषा का उद्भव 10वीं शताब्दी से मानते हैं। डॉ. शिवप्रसाद सिंह ने "सूरपूर्व ब्रजभाषा" में इसका उद्गम सन् 1000 के आस-पास शौरसेनी अपभ्रंश से माना है— " सन 1000 के आस-पास शौरसेनी अपभ्रंश की अपनी जन्मभूमि में ब्रजभाषा का उदय हुआ।"

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने इस भाषा का सम्बन्ध गुजरात तथा उसके विद्वान आचार्य हेमचन्द्र से जोड़ दिया। आचार्य हेमचन्द्र के ग्रन्थ— "व्याकरण और देशी नाममाला" में अनेक शब्द ब्रजभाषा से मिलते-जुलते हैं।